रे हो दुनियां बावरी

रे हो दुनियां बावरी, खोवत जनम गमार।
मदमाती माया की छाकी, सुनत नाहीं पुकार।।
अपनी छायासों आप बिगूती, बल खोए चली हार।
आग बिना जलत अंग में, जल बल होत अंगार।।
सत सब्द को कोई न चीन्हे, सूने हिरदे नहीं संभार।
समझे साध जो आपको देखें, तामें बड़ी अंधार।।
रे यामें केते आप कहावें स्याने, पर छूटत नहीं विकार।
स्यानप लेके कंठ बंधाए, या छल रच्यो है नार।।
रे मूढ़मती या फंद में उरझे, उपजत नहीं विचार।
आप न चीन्हें घर ना सूझे, न लखें रचनहार।।
अपनी मत ले ले साधू बोले, सब्द भए अपार।
बोहोत सबद को अर्थ न उपजे, या बल सुपन धुतार।।
यामें सतगुर मिले तो संसे भानें, पैंडा देखावे पार।
तब सकल सबद को अर्थ उपजे, सब गम पड़े संसार।।
तब बल ना चले इन नारी को, लोप न सके लगार।
महामत यामें खेलत पिया संग, नेहेचल सुख निरधार।।